Visit **Dwarkadheeshvastu.com** For

FREE Vastu Consultancy, Music, Epics, Devotional Videos
Educational Books, Educational Videos, Wallpapers

****

All Music is also available in **CD** format. **CD Cover** can also be print with your Firm Name

****

We also provide this whole Music and Data in **PENDRIVE** and **EXTERNAL HARD DISK.**

Contact : Ankit Mishra (+91-8010381364, dwarkadheeshvastu@gmail.com)

Jh lw;Z

pkyhlk

lw;Zpkyhlk] lw;Z iwtu] lw;Z;=]
lw;Zxk;=h] lw;Z}kn'kuke Lrks=]
Jh vkfnR; ân; Lrks=e~]
lw;Zrfr o vkjrh

हीरा पॉकेट बुक्स में प्रकाशित धार्मिक पुस्तकें

• सोमवार व्रतकथा	5/-	• काली चालीसा	5/-	• गणेश सहस्त्रनाम	5/-
• मंगलवार व्रतकथा	5/-	• सूर्य चालीसा	5/-	• दुर्गा उपासना	10/-
• बृहस्पतिवार व्रतकथा	5/-	• भैरव चालीसा	5/-	• शिव उपासना	10/-
• शुक्रवार व्रतकथा	5/-	• सरस्वती चालीसा	5/-	• हनुमान उपासना	10/-
• शनिवार व्रतकथा	5/-	• राम चालीसा	5/-	• लक्ष्मी उपासना	10/-
• सप्तवार व्रतकथा	10/-	• शिरडी साईं चालीसा	5/-	• काली उपासना	10/-
• सत्यनारायण व्रतकथा	5/-	• चालीसा संग्रह	8/-	• रामायण मनका	5/-
• वैभव लक्ष्मी व्रतकथा	5/-	• लक्ष्मी सहस्त्रनाम	5/-	• सुन्दर काण्ड	8/-
• हनुमान चालीसा	5/-	• हनुमान सहस्त्रनाम	5/-	• हनुमान बाहुक	10/-
• दुर्गा चालीसा	5/-	• सूर्य सहस्त्रनाम	5/-	• आरती संग्रह	5/-
• शिव चालीसा	5/-	• गायत्री सहस्त्रनाम	5/-	• मीरा भजनमाला	8/-
• गणेश चालीसा	5/-	• विष्णु सहस्त्रनाम	5/-	• कबीर भजनमाला	8/-
• लक्ष्मी चालीसा	5/-	• शिव सहस्त्रनाम	5/-		
• शनि चालीसा	5/-	• गोपाल सहस्त्रनाम	5/-		

अपने निकट के पुस्तक विक्रेता से खरीदें, न मिलने पर कोई भी 100/- या अधिक मूल्य की पुस्तकें मनीआर्डर भेजकर घर बैठे प्राप्त करें। डाक व्यय माफ।

श्री सूर्य चालीसा

॥ दोहा ॥

श्री गणपति पद कमल महँ, प्रेम सहित धरि ध्यान।
सूरज चालीसा कहौं, द्रवौ दया करि नाथ।।
जय दिनकर जय दिवाकर, दीनदयाल दिनेश।
जय जग पालक प्रभाकर, कीजै हरण क्लेश।।

॥ चौपाई ॥

जयति सूर्य नारायण स्वामी।
करहु कृपा प्रभु अन्तर्यामी॥
अगन कांति धर गगन बिहारी।
अनुपम ज्योति कला छबि न्यारी॥
युग सहस्त्र योजन तनु राजै।
माथे कनक मुकुट-मणि साजै॥

कुण्डल कलित कपोलन सोहै।
सो लखि तेज तेज-पति मोहै।।
श्वेत वर्ण षट्-दश हय नाधे।
अरुण सारथी रजु कर-साधे।।
नौ लख योजन रथ चौड़ाई।
सो छत्तीस लक्ष लम्बाई।।
रत्न जड़ित रथ पर प्रभु राजित।

लखि गति सहस चंचला लाजित।।
नौ करोड़ इक्यावन लाखा।
परिक्रमा रवि की श्रुति भाखा।।
अगणित दैत्य नित्य संहारहिं।
जग भक्तन कर कष्ट निवारहिं।।
उदय होत निशि कहँ तक भाजै।
तव सतयुग कर डंका बाजै।।

धनि हो धन्य भानु भगवाना।
तव महिमा प्रत्यक्ष बखाना।।
तेजराशि अतुलित बलधारी।
तव महिमा वरणत त्रिपुरारी।।
सुनहु उमा शुभ चरित दिनेशा।
सकल हरण जन कष्ट क्लेशा।।
कुष्ट वरण जिनके तन होई।

रवि पर ध्यान धरै नित जोई।।
व्रत बिनु लोन करै रविवारा।
ब्रह्मचर्य युत धारि विचारा।।
द्विज सन रविकर सुनै पुराना।
पूजन करै राखि उर ध्याना।।
हवन कराई धरै मन धीरा।
सोइ भस्म लै मलै शरीरा।।

निश्चय छूटै कुष्ट कलेशा।
ऐसे दीन दयालु दिनेशा।।
अन्धहु प्रभु महँ ध्यान लगावै।
निश्चय दिव्य दृष्टि को पावै।।
जो निश्चय कर प्रेम प्रतीती।
निशदिन रवि पर धारै प्रीती।।
रवि दिन प्रेम सहित चित लाई।
सूर्य पुराण सुनै सुखदाई।।

करै नेम द्वादश रविवारा।
रहे लोन बिनु एक अहारा।।
करै शयन कुश कास डसाई।
हर्षित सदा सूर्य गुण गाई।।
जो अस प्रभु महँ ध्यान लगावै।
बन्ध्यहु नारि पुत्र सुख पावै।।
कह शिव संशय करै न कोई।
सत्य वचन मम मृषा न होई।।

जग हित लागि प्रेम रस बानी।
मुनि अस गौरि हृदय हर्षानी।।
धन्य-धन्य सूरज अघनाशी।
दीन दयानिधि मंगल राशी।।
महा अघिन कहँ तारण वाले।
नारद शाप निवारण वाले।।
सत्राजित के मान रखैया।
मणि ते स्वर्ण मेह वर्षैया।।

प्रात रूप धारे चतुरानन।
राजे विष्णु रूप मध्यानन।।
शम्भु रूप धरि सायंकाला।
त्रिभुवन माहि करै प्रति पाला।।
वर्षा बीच पुनि बारह नामा।
धरि भक्तन कर पूजहि कामा।।
षट ऋतु दिन तिथि वर्ष महीना।
पलक मुहूर्त तुम्हैं आधीना।।

खग मृग जीव जन्तु नर नारी।
घन गर्ज नभ वर्षत बारी।।
बृक्ष लतादिक प्रभु तव जानत।
फूलत फरत झरत पुनि जामत।।
चन्द्रादिक नवग्रह नभ तारें।
ये सब तुम्हरहि नाथ सहारें।।
धन्य सूर्य नारायण स्वामी।
दिव्य दृष्टि दै अन्तर्यामी।।
करहु बेगि अब पूरण आशा।

होई हृदय मम ज्ञान प्रकाशा।।
जो यह चरित सूर्य को गावै।
सब सुख भोग परम पद पावै।।
नमत राम सुन्दर प्रभु दासा।
लग प्रयाग आश्रम दुर्वासा।।

॥ दोहा ॥

रवि चालीसा प्रेम युत, पाठ करे धनि ध्यान।
सुख सम्पति आयु बढ़े, होई सदा कल्याण।।

सूर्यदेव का पूजन

सूर्य ग्रह का शुभ प्रभाव निश्चय ही फलदायी होता है। यह उत्तम स्वास्थ्य, धन, मान एवं वैभवादि प्रदान करता है, किन्तु इसका अशुभ प्रभाव अनेकों रोगों को जन्म देता है। व्यापार आदि में बाधा उत्पन्न करता है तथा इसका प्रकोप मनुष्य को भौतिक सुखों से वंचित कर देता है। सूर्यदेव की साधना से रोग, अपमृत्यु तथा दरिद्रता का विनाश हो जाता है। प्रकोप का शमन हो जाता है, शांति देता है, साथ ही सूर्यदेव की कृपा से वह सब कुछ प्राप्त हो जाता है, जिसकी कल्पना भी न की गई होती है। शुद्ध, पवित्र और सच्चे मन से की गई सूर्यदेव की साधना अवश्य ही सफल सिद्ध होती है।

लौकिक और पारलौकिक ज्ञान सूर्यदेव के अनुग्रह से ही प्राप्त होता हैं। सूर्य मंत्र का जप तथा नित्य सूर्य नमस्कार करने वाला मनुष्य नीरोगता व दिव्य एवं सफल बनने का वरदान प्राप्त करता है। सूर्यदेव का मूलमंत्र इस प्रकार है–

ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्यः श्रीं।

विनियोग–ॐ अस्य श्रीसूर्यमंत्रस्य भृगुऋषिः, गायत्रीछंदः, भगवान दिवाकरो देवता, ह्रीं बीजं, श्रीशक्तिः, ममाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास–ॐ भृगुऋषये नमः शिरसि, गायत्रीछंदसे नमः मुखे। दिवाकरदेवतायै नमः हृदये। ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। श्रीं शक्तयै नमः पादयोः। विनियोगाय नमः सर्वांगे।

कर-हृदयादिन्यास—ॐ सत्यतेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा अंगुष्ठाभ्यां नमः, हृदयाय नमः। ॐ ब्रह्मतेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा तर्जनीभ्यां नमः, शिरसे स्वाहा। ॐ विष्णुतेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा मध्यमाभ्यां नमः, शिखाये वषट्। ॐ रुद्रतेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा अनामिकाभ्यां नमः, कवचाय हुम्। ॐ अग्नेयतेजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा कनिष्ठिकाभ्यां नमः, नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ सवतिजो ज्वालामणे हुं फट् स्वाहा करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः, अस्त्राय फट्।

मूर्तिन्यास—ॐ आदित्याय नमः शिरसि, ॐ यं रवये नमः मुखे। ॐ एं मानवे नमः हृदये। ॐ इं भास्कराय नमः गुह्ये। ॐ सूर्याय नमः पादयोः।

मंत्रवर्णन्यास—ॐ ऊं नमः शिरसे। ॐ णिं नमः कंठे। ॐ सूं नमः हृदये। ॐ र्यं नमः कुक्षौ। ॐ आं नमः नाभौ। ॐ दिं नमः लिंगे। ॐ त्यं नमः पादयोः।

शोणाम्भोरुह संस्थितं त्रिनयनं वेदत्रयीविग्रहं।
दानाम्भोजयुगाम्योनिद्धत हस्तौ प्रबालप्रभम्।।
केयूरांगदहारकं कणधरं कर्णोल्लसकुण्डलम्।
लोकोत्पत्तिविनाशपालनकरं सूर्य्यं गुणार्बिधं भजे।।

इस प्रकार सूर्यदेव का ध्यान करके पुष्पांजलि प्रदान करें तथा पूजनादि करके मूलमंत्र का जप करें।

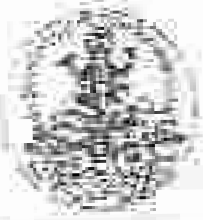

श्री सूर्य यंत्र

जिसकी जन्मकुंडली में सूर्य नेष्ट राशि में पड़ा हो अथवा गोचर से अशुभ स्थानों में भ्रमण कर रहा हो, वह शुक्लपक्ष में रविवार के दिन सूर्य यंत्र को अष्टगंध से, अनार की कलम द्वारा भोजपत्र पर लिखकर, तांबे, चांदी या सोने के ताबीज में डालकर और लाल रंग के डोरे में पिरोकर पुरुष अपनी दाहिनी भुजा पर तथा स्त्री गले में धारण करें। इसको ध ारण करने से सूर्य का प्रकोप शांत होता है।

६	१	८
७	५	३
२	९	४

श्री सूर्य गायत्री

सूर्य मंत्र की विधि अनुसार सूर्य गायत्री का जप किया जाए, तो इससे सूर्य का कुप्रभाव समाप्त होकर नीरोगता और दीर्घजीवन की प्राप्ति होती है।

ॐ भास्कराय विद्महे दिवाकराय धीमहि। तन्नो तन्नो प्रचोदयात्।

सूर्य की ओर मुख करके सूर्य गायत्री का जप करने से अनेक रोगों से छुटकारा मिलता है, दरिद्रता दूर होती हैं और समस्त पापों से पिंड कट जाता है। सूर्य के हस्त नक्षत्र पर रहते हुए इसका जप करने वाला महामृत्यु को लांघ जाता है।

श्री सूर्य द्वादशनाम स्तोत्र

केवल सूर्य द्वादशनाम स्तोत्र का पाठ करना आदित्य हृदय स्तोत्र का विकल्प नहीं है। द्वादशनाम स्तोत्र का पाठ विशेष परिस्थिति में आराधना के भंग होने की स्थिति से बचने के लिए है।

आदित्यः प्रथमं नाम द्वितीयं तु दिवाकरः।
तृतीयं भास्करः प्रोक्तं चतुर्थं तु प्रभाकरः।।
पंचमं तु सहस्त्रांशु षष्ठं त्रैलोक्यलोचनः।
सप्तमं हरिदश्वश्च अष्ठमं च विभावसुः।।
नवमं दिनकृत प्रोक्तो दशमं द्वादशात्मकः।
एकादशं त्रयोमूर्तिः द्वादशं सूर्य एव च।।

श्री आदित्यहृदय स्तोत्रम्

विनियोग :

ॐ अस्य आदित्यहृदयस्तोत्रस्यागस्त्यऋषिरनुष्टप्छन्दः, आदित्य हृदयभूतो भगवान ब्रह्मा देवता निरस्ताशेषविघ्नतया ब्रह्मविद्यासिद्धौ सर्वत्र जयसिद्धौ [illegible]ियोगः।

ॐ इस आदित्य हृदय स्तोत्र के ऋषि अगस्त्य, छंद अनुष्टप, देवता सूर्य के हृदय रूप भगवान ब्रह्मा हैं और इसका पाठक समस्त विघ्नों के निवारण और ब्रहविद्या की सिद्धि

और सब कार्यों में सफलता के लिए किया जाता है।

ऋष्यादिन्यास :

ऋषि आदि की स्थापना पाठ से पहले इस प्रकार करें—

ॐ अगस्त्यऋषये नमः, शिरसि। अनुष्टप्छन्टसे नमः, मुखे। आदित्यहृदयभूतब्रह्मदेवतायै नमः, हृदि। ॐ बीजाय नमः, गुह्ये। रश्मिमते शक्तये नमः, पादयो। ॐ तत्सवितुरित्यादि गायत्रीकीलकाय नमः, नाभौ।

'ॐ अगस्त्य ऋषि को नमस्कार है' कहकर दाहिने हाथ से सिर को स्पर्श करें।

'ॐ अनुष्टुप छंद को नमस्कार' कहकर मुंह को हाथ से छुएं।

'ॐ आदित्य के हृदय रूप ब्रह्म देवता को नमस्कार' कहकर हृदय स्पर्श करें।

'ॐ बीज मंत्र को नमस्कार' कहकर शरीर के गुप्तांगों को छुएं।

'ॐ किरणों की शक्ति को नमस्कार' कहकर दोनों

पैरों को छुएं।

ॐ उस सविता देवता इत्यादि गायत्री-मंत्र के कीलक को नमस्कार कहकर नाभि को दाहिने हाथ से छुएं।

करन्यास :

ॐ रश्मिमते अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ समुद्यते तर्जनीभ्यां नमः। ॐ देवासुरनमस्कृताय मध्यमाभ्यां नमः। ॐ विवस्वते अनामिकाभ्यां नमः। ॐ भास्कराय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ भुवनेश्वराय करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

(हाथ की उंगलियों में मंत्र शक्ति के प्रवेश की विधि)

केवल 'ॐ' नाम जपते हुए भी पांचों उंगलियों और उसके पीछे के हिस्से को क्रमशः स्पर्श किया जाना चाहिए। गायत्री मंत्र को जपते हुए हाथों की उंगलियों आदि को छूना चाहिए।

ॐ किरणों की माला वाले! दोनों हाथों के अंगूठों को नमस्कार बोलें।

ॐ आकाश मंडल में उदय हो रहे देवताः तर्जनी उंगलियों को नमस्कार कहकर अंगूठों से छुएं। देवासुरों

द्वारा जिसे नमस्कार किया जाता है, कहते हुए मध्यमा उंगलियों को स्पर्श करें। विवस्वान् कहते हुए अनामिकाओं का स्पर्श करें। भास्कराय कहते हुए कनिष्ठिका का स्पर्श करें। भुवनेश्वराय कहते हुए दोनों हाथों के पृष्ठ भाग का स्पर्श करें।

हृदयादि अंगन्यास :

ॐ रश्मिते हृदयाय नमः। ॐ समुद्यते शिरसे स्वाहा। ॐ देवासुरनमस्कृताय शिखायै वषट्। ॐ विवस्वते कवचाय हुम्। ॐ भास्कराय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ भुवनेश्वराय अस्त्राय फट्।

रश्मिरूप सूर्य को नमस्कार कहते हुए हृदय का स्पर्श करें।

ॐ देवों और राक्षसों के द्वारा वंदित! कहकर चोटी को छुएं।

'गतिमान' को नमस्कार कहकर सिर का स्पर्श करें।

ॐ विकासमान तेजस्वी देव! को नमस्कार कहकर दोनों कंधों को छुएं।

प्रकाशमान को नमन, ऐसा कहकर तीनों नेत्रों का स्पर्श करें।

ॐ समस्त लोकों में शासक को नमस्कार (अस्त्राय फट्) कहकर बाएं हाथ की हथेली पर दाहिने हाथ की मध्यमा, अनामिका, दोनों उंगलियों से हल्का-सा शब्द करें। इसके बाद भगवान सूर्य का ध्यान करें और गायत्री मंत्र का जप करते हुए 'ॐ भास्कराय विद्महे महातेजाय धीमहि तन्नो सूर्यः प्रचोदयात्' इस सूर्य-गायत्री को सात बार पढ़ें।

श्री सूर्यदेव स्तुति

प्रातः स्मरामि खलु तत् सवितुर्वरेण्यं,
रूपं हि मण्डलमृयोऽथे तनुर्यजूंषि।
सामानि यस्य किरणाः प्रभवादि हेतुमुः,
ब्रह्माहरात्मक्कमल यमचिन्त्यरूपम्।।
प्रातर्नमामि तरणिं तनुवाङ्मनोभिः,
ब्रह्मेन्द्रपूर्वक सुरर्नुतमर्चितं च।
वृष्टि प्रमोचन विनिग्रह हेतु भूतं:

त्रैलोक्य पालनपरम त्रिगुणात्मकं च।।
प्रातर्भजामि सवितारमनन्त शक्तिं,
पापौध शत्रुभयरोग हरं परम चं।

श्री सूर्य देव की स्तुति बहुत प्रभावी होती है। इससे सूर्य के सभी अनिष्ट एवं पीड़ादायक प्रभाव समाप्त होकर उनकी कृपा प्राप्त हो जाती है।

श्रीसूर्यदेव जी की आरती

जय जय जय रविदेव, जय जय जय रविदेव।
रजनीपति मदहारी, शतदल जीवनदाता।
षटपद मन मुदकारी, हे दिनमणि! ताता।
जग के हे रविदेव, जय जय जय रविदेव।
नभमण्डल के वासी, ज्योतिप्रकाश देवा।
निज जनहित सुखरासी, तेरी हम सब सेवा।
करते हैं रविदेव, जय जय जय रविदेव।
कनक बदन महं सोहत, रुचि प्रभा प्यारे।
निज मंडल से मंडित, अजर अमर छवि धारी।
हे सुरवर रविदेव जय जय जय रविदेव।